महादेवी वर्मा (26 मार्च, 1907 – 11 सितम्बर, 1987)

आधुनिक हिंदी कविता में महादेवी वर्मा एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरीं। उन्होंने अपनी भाषा खड़ी बोली हिंदी को संवेदनशील ग्राहिका के रूप में उपस्थित किया। महादेवी जी में कवि प्रतिभा सात वर्ष की उम्र में ही मुखर हो उठी थी। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी कविताएं देश की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाने लगी थी। महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ एक विशिष्ट गद्यकार एवं चित्रकार भी थीं। उनकी कविताओं ने वेदना में जन्म लिया और करूणा में आवास पाया। उनका मानना था कि पीड़ा और वेदना का यह संसार नकारात्मंक नहीं है। महादेवी वर्मा ने न तो बुद्धि वैभव से पाठकों को आश्चर्य में डाला और न ही ठस सिद्धांतों को माँज-धोकर, चमका-चमका कर कविता में जड़ने की कोशिश की। उनका प्रयास तो केवल जीवन के स्पंदन और गहरे मर्म को उद्घाटित करने का रहा। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं: – नीहार, रश्मिउ, नीरजा, सांध्यरगीत, अतीत के चलचित्र, यामा, पथ के साथी, मेरा परिवार ।